हिन्दुस्तानी

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक – प्यारेलाल अंक ३६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ५ अक्तूबर, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

बिड़ला-भवन, नओी दिल्ली, २०-९-'४७

भगवान डर भगाता है

चूँकि किसीने .कुरान शरीफ़की आयतें पढ़े जानेपर अेतराज़ नहीं किया, अिसलिअे आजकी प्रार्थना हमेशाकी तरह जारी रही।

अपने भाषणमें गांधीजीने हाल ही में गाओी गओी प्रार्थनाका ज़िक्र किया। अुसमें कविने कहा है कि जो लोग भगवानपर भरोसा करते हैं, अुनके दिलोंसे वह सारा डर दूर कर देता है।

आज हिन्दू और सिक्ख दिल्लीके मुसलमानोंको डरा रहे हैं। जो लोग .खुद डरसे छूटना चाहते हैं, अुन्हें दूसरोंके दिलोंमें डर पैदा नहीं करना चाहिये।

बन्नू, सीमाप्रान्तका अेक शहर है, जहाँ मैं अेक मुसलमान दोस्तके घरमें रह चुका हूँ। बन्नूसे कुछ लोग मेरे पास आये और अुन्होंने शिकायत की कि अगर ग़ैर-मुस्लिमोंको वहाँसे जल्दी ही हटाया न गया, तो वे सब मार डाले जायँगे और बरबाद हो जायँगे। वे मुसलमान दोस्त; जिनके घरमें मैं ठहरा था, पहलेकी ही तरह अपने विश्वासोंमें पक्के हैं। मगर वे अकेले ही अैसे हैं, अिसलिअे वे चाहे जितनी कोशिश करें, अुन्हें बचा नहीं सकते। दूसरे मुसलमान, जिनमें सरहदके मुसलमान भी शामिल हैं, रोज़ाना आकर अैसी हरकतें करते हैं, जिनसे ग़ैर-मुस्लिमोंमें डर पैदा हो। अिसलिअे समय रहते ग़ैर-मुस्लिमोंको वहाँसे हटा लिया जाना चाहिये। मैंने (गांधीजीने) अुनसे कहा कि मेरे हाथमें तो अधिकार नहीं है, मगर मैं आपका क़िस्सा पण्डितजी और सरदार पटेलको सुना दूँगा। अुन दोस्तोंने दरखास्त की कि अुनकी मददके लिअे हिन्दू फ़ौज भेजी जाय। अिसपर मैंने अुनसे वही बात कही, जो मैं पहले कओी बार कह चुका हूँ कि "आपको भगवानके सिवा और कोओी नहीं बचा सकता। कोओी भी अिन्सान दूसरेको बचा नहीं सकता।" हममेंसे कोओी भी नहीं कह सकता कि कल या अेक मिनटके बाद भी वह ज़िन्दा रहेगा या नहीं। अेक भगवान ही अैसा है, जो पहले था, अब भी है और आगे भी हमेशा रहेगा। अिसलिअे आपका फ़र्ज़ है कि आप अुसीको पुकारें और अुसीका भरोसा रखें। जो भी हो, कोओी शख़्स कभी किसी भी हालतमें बुराओीका बदला बुराओीसे न ले।

अल्पसंख्यकोंकी हिफ़ाज़त

आगे चलकर गांधीजीने कहा कि पाकिस्तानके हिन्दुओं और सिक्खोंका अिस तरह डरना वहाँकी सरकारके लिअे बहुत बड़े कलंककी बात है और .खुद क़ायदे आज़म द्वारा दिलाये गये अल्पसंख्यकोंकी हिफ़ाज़तके विश्वासोंके खिलाफ़ है। हिन्दुस्तानी संघकी बहुसंख्यक जातिकी ही तरह पाकिस्तानकी बहुसंख्यक जातिका यह फ़र्ज़ है कि वह अपने यहाँके अुन अल्पसंख्यकोंकी हिफ़ाज़त करे, जिनकी अिज़्ज़त, ज़िन्दगी और जायदाद अुसके हाथमें है।

भाओी दुश्मन बन गये?

यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि जो लोग भाओी-भाओीकी तरह रहे हैं, जलियाँवाला बागके हत्याकांडमें जिनका खून अेक साथ बहा है, आज वे अेक दूसरे के दुश्मन कैसे हो गये? जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, तब तक तो यही कहूँगा कि अैसा नहीं होना चाहिये। अिससे मेरे दिलमें जो दुःख बना रहता है, अुसमें मैं हर दिन, हर घंटे भगवानसे शान्तिकी प्रार्थना करता रहता हूँ। अगर शान्ति नहीं हुओी, तो मैं भगवानसे यही प्रार्थना करूँगा कि वह मुझे अुठा ले।

शरणार्थी

आज बरसात होते देखकर मुझे दिल्लीके और दोनों, पूरबी और पच्छिमी पंजाबके शरणार्थियोंका खयाल आता है। वे बेघर, बेआसरा होकर किसके पापोंका फल भोग रहे हैं? मैंने सुना है कि हिन्दुओं और सिक्खोंका ५७ मील लम्बा काफ़ला पच्छिमी पंजाबसे पूरबी पंजाबमें आ रहा है। अिस खयालसे मेरा सिर घूमने लगता है कि यह कैसे हो सकता है? दुनियाके अितिहासमें अिसके जोड़की कोओी घटना नहीं मिलेगी। और अिससे मेरा सिर शर्मके मारे झुक जाता है; जैसा कि आप सबका सिर भी झुक जाना चाहिये। यह अिस बातके पूछनेका वक़्त नहीं है कि किसने ज्यादा बुराओी की है और किसने कम। यह वक़्त तो अिस पागलपनको रोकनेका है।

मुसलमानोंकी वफ़ादारी ज़रूरी है

किसीने मुझसे कहा कि हिन्दुस्तानी संघका हरअेक मुसलमान पाकिस्तानके प्रति वफ़ादार है, हिन्दुस्तानके प्रति नहीं। अिस अिलज़ामसे मैं अिन्कार करता हूँ। लगातार अेकके बाद दूसरा मुसलमान मेरे पास आकर अिससे अुलटी बात मुझसे कह गया है। हर हालतमें यहाँके बहुसंख्यकोंको अल्पसंख्यकोंसे डरनेकी ज़रूरत नहीं है। आखिरकार हिन्दुस्तानके साढ़े चार करोड़ मुसलमान अिस देशकी लम्बाओी-चौड़ाओीमें फैले हुअे हैं। गाँवोंमें रहनेवाले मुसलमान तो सेवाग्रामके मुसलमानोंकी तरह ग़रीब और सीधेसादे हैं। अुन्हें पाकिस्तानसे कोओी मतलब नहीं। अुन्हें क्यों निकाला जाय? अगर कोओी देशद्रोही हो, तो अुनसे हमेशा क़ानूनके ज़रिये निपटा जा सकता है। देशद्रोहियोंको हमेशा गोली मार दी जाती है, जैसा कि मि० अेमरीके लड़के तक के बारेमें हुआ था; अगरचे मैं मंजूर करता हूँ कि देशद्रोहियोंसे अिस तरह बरतना मेरा रास्ता नहीं है। दूसरे लोगोंने मुझसे कहा कि कुछ मुसलमान अफ़सर यहाँ अिसलिअे रखे जा रहे हैं कि हिन्दुस्तानके सारे मुसलमानोंको पाकिस्तानके प्रति वफ़ादार रखा जा सके। कुछ लोग कहते हैं कि मुसलमान, सारे हिन्दुओंको काफ़िर मानते हैं। मगर पढ़े-लिखे मुसलमानोंने मुझसे कहा है कि यह बिलकुल ग़लत बात है, क्योंकि हिन्दू भी .खुदाकी प्रेरणासे लिखे गये धर्मग्रंथोंको अुसी तरहसे मानते हैं, जिस तरह मुसलमान, अीसाओी और यहूदी लोग। जो हो, मैं सभी हिन्दुओं और सिक्खोंसे अपील करता हूँ कि वे अपने दिलोंसे मुसलमानोंका सारा डर दूर कर दें, अुनके साथ दयाका बरताव करें, अुन्हें अपने पुराने घरोंमें आकर रहनेके लिअे कहें और अुनकी हिफ़ाज़तकी गारण्टी दें। मुझे पूरा विश्वास है कि अिस तरह आप पाकिस्तानके मुसलमानोंसे, यहाँ तक कि सीमाप्रान्तकी सरहदकी जातियोंसे भी भला बरताव पा सकेंगे। हिन्दुस्तानकी शान्ति और ज़िन्दगीके लिअे यही अेक रास्ता है। हिन्दुस्तानसे

www.vinoba.in

हरअेक मुसलमानको भगाने और पाकिस्तानसे हरअेक हिन्दू और सिक्खको भगानेका नतीजा यह होगा कि दोनों अुपनिवेशोंमें युद्ध होगा और देश हमेशा के लिअे बरबाद हो जायगा। अगर दोनों अुपनिवेशोंमें यह आत्मघाती नीति बरती गअी, तो अुससे पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनोंमें अिस्लाम और हिन्दू धर्मका नाश हो जायगा। भलाअी सिर्फ भलाअीसे ही पैदा होती है। प्यारसे प्यार पैदा होता है। जहाँ तक बदला लेनेका ताल्लुक़ है, अिन्सानको यही शोभा देता है कि वह बुराअी करनेवालेको भगवानके हाथमें छोड़ दे। अिसके सिवा दूसरा कोअी रास्ता मैं नहीं जानता।'

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २१-९-'४७

अेतराज़ करनेवालेका मान रखा गया

बिड़ला-भवनके मैदानमें प्रार्थनाके वक़्त जब अेक आदमीने '*अल-फ़ातेहा*' पढ़े जानेपर अेतराज़ किया, तो प्रार्थना रोक दी गअी। मगर गांधीजीने सभाके सामने भाषण दिया। अुन्होंने कहा कि मैं अेतराज़ करनेवालेसे बहस नहीं करना चाहता। लोगोंके दिलोंमें आज जो .गुस्सा भरा हुआ है, अुसे मैं समझता हूँ। वातावरण अैसा तंग है कि मैं अेतराज़ करनेवाले अेक आदमीकी भी अिज्ज़त करना अुचित समझता हूँ। मगर अिसका यह मतलब नहीं है कि मैंने भगवानको या अुसकी प्रार्थनाको अपने दिलसे हटा दिया है। प्रार्थनाके लिअे पवित्र वातावरणकी ज़रूरत है। अैसे अेतराज़ोंसे हरअेकको यह बात दिलमें रख लेनी चाहिये कि जो लोग जन-सेवा करना चाहते हैं, अुन्हें अपनेमें अपार धीरज और सहिष्णुता रखनेकी ज़रूरत है। किसीको दूसरोंपर अपने विचार ज़बर्दस्ती लादनेकी कोशिश कभी नहीं करनी चाहिये।

बिना फलका पेड़ सूख जाता है

गांधीजीने अिसके बाद कहा कि मैं श्रीमती अिन्दिरा गांधीके साथ अेक अैसे मोहल्लेमें गया था, जहाँ हिन्दू बहुत बड़ी तादादमें रहते हैं। अुसके पड़ोसमें ही मुसलमानोंका अेक बड़ा मोहल्ला है। हिन्दुओंने "महात्मा गांधीकी जय" कहकर मेरा स्वागत किया। मगर वे नहीं जानते कि अगर हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख अेक-दूसरेके साथ शान्तिसे नहीं रह सकते, तो मेरे लिअे कोअी जय नहीं है, और न मैं ज़िन्दा ही रहना चाहता हूँ। मैं अिस सचाअीको आपके दिलोंमें जमानेकी पूरी-पूरी कोशिश कर रहा हूँ कि अेकतामें ताक़त है और फूटमें कमज़ोरी। जिस तरह अेक वृक्ष, जिसमें फल नहीं लगते, आखिरमें सूख जाता है, अुसी तरह अगर मेरी सेवाका मनचाहा नतीजा न निकला, तो मेरा शरीर भी बेकाम हो जायगा। जितना यह सच है, अुतना ही सच यह भी है कि अिन्सानको फलकी परवाह किये बग़ैर अपना काम करना चाहिये। आसक्तिसे अनासक्ति ज़्यादा फ़ायदेमन्द है। मैं सिर्फ़ अिस सचाअीकी व्याख्या करके समझा रहा हूँ। जिस शरीरकी अुपयोगिता खत्म हो गअी है, वह बरबाद हो जायगा और अुसकी जगह दूसरा नया शरीर लेगा। आत्माका कभी नाश नहीं होता। वह सेवाके कामोंके ज़रिये अपनी मुक्ति या निजात हासिल करनेके लिअे नये शरीर बदलती रहती है।

अपने घरोंमें ही रहो

अुस हिस्सेके मुसलमानोंसे हुअी चर्चाका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि मैंने अुन लोगोंको यही सलाह दी है कि अगर आपके हिन्दू पड़ोसी आपको सतायें, यहाँ तक कि आपको मार डालें, फिर भी आप अपने घर न छोड़ें। अगर यह बात आपकी समझमें न आये, तो मौतसे बचनेके लिअे अपनी जगह बदलनेकी आपको आज़ादी है। अगर आप मेरी सलाह मानेंगे, तो अिस तरह अिस्लाम और हिन्दुस्तान दोनोंकी सेवा करेंगे। जो हिन्दू और सिक्ख मुसलमानोंको सतायेंगे, वे अपने धर्मको नीचे गिरायेंगे और हिन्दुस्तानको अैसा नुक़सान पहुँचायेंगे, जिसे कभी ठीक नहीं किया जा सकता। यह सोचना निरा पागलपन है कि साढ़ेचार करोड़ मुसलमानोंको बरबाद किया जा सकता है या अुन सबको पाकिस्तान भेजा जा सकता है। कुछ लोगोंने कहा है कि मैं अैसा करना चाहता हूँ। मेरी यह अिच्छा कभी नहीं रही कि फ़ौज और पुलिसके ज़रिये मुसलमान शरणार्थियोंको अुनकी जगहोंपर फिरसे बसाया जाय। मैं यह ज़रूर मानता हूँ कि जब हिन्दू और सिक्खोंका .गुस्सा शान्त हो जायगा, तो वे खुद ही अिन शरणार्थियोंको अिज्ज़तके साथ वापिस ले जायेंगे। मुझे अुम्मीद है कि मुसलमानों-द्वारा खाली किये हुअे मकानोंको सरकार अच्छी हालतमें रखेगी और जब तक शरणार्थी अुनमें न लौटें, तब तक ट्रस्टीकी तरह अुनकी देखरेख करेगी।

सरकार स्तीफा कब दे?

अेक अखबारने बड़ी गम्भीरतासे यह सुझाव रखा है कि अगर सरकारमें वह शक्ति नहीं है, यानी अगर जनता सरकारको अुचित काम न करने दे, तो अुस अखबारकी सलाह है कि मौजूदा सरकार अुन लोगोंके लिअे अपनी जगह खाली कर दे, जो सारे मुसलमानोंको मार डालने या अुन्हें देश-निकाला देनेका पागलपन-भरा काम कर सकें। यह अेक अैसी सलाह है, जिसपर चलकर देश खुदकुशी कर सकता है और हिन्दू धर्म जड़से बरबाद हो सकता है। मुझे लगता है कि अैसे अखबार तो आज़ाद हिन्दुस्तानमें रहने लायक़ ही नहीं हैं। प्रेसकी आज़ादीका यह मतलब नहीं कि वह जनताके मनमें ज़हरीले विचार पैदा करे। जो लोग अैसी नीति अख़्तियार करना चाहते हैं, वे अपनी सरकारसे स्तीफ़ा देनेके लिअे भले कहें। मगर जो दुनिया शान्तिके लिअे अभी तक हिन्दुस्तानकी तरफ़ ताकती रही है, वह आगेसे अैसा करना बन्द कर देगी। हर हालतमें, जब तक मेरी साँस चलती है, मैं अैसे निरे पागलपनके ख़िलाफ़ अपनी सलाह देना जारी रखूँगा।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २२-९-'४७

अेतराज अुठानेवालोंका फ़र्ज़

मेरा यह विश्वास है कि प्रार्थनामें अेक भी अेतराज अुठानेवाले आदमीके सामने झुकनेमें और प्रार्थनाको रोकनेमें मैंने अकलमंदी दिखाअी है। फिर भी, यहाँ अिस घटनाकी ज़्यादा विस्तारसे छान बीन करना अनुचित न होगा। हमारी प्रार्थना आम लोगोंके लिअे खुली अिसी अर्थमें है कि जनताके किसी भी आदमीको अुसमें शामिल होनेकी मनाअी नहीं है। वह खानगी मकानके अहातेमें की जाती है। अुचित बात यह है कि सिर्फ़ वे ही लोग प्रार्थनामें शामिल हों, जो .कुरानकी आयतोंके साथ पूरी प्रार्थनामें सच्चे दिलसे श्रद्धा रखते हैं। बेशक, यह कायदा खुले मैदानमें होनेवाली, प्रार्थनापर भी लागू किया जाना चाहिये। प्रार्थना-सभा कोअी बहस या चर्चा करनेकी सभा नहीं है। अेक ही मैदानमें कअी जातियोंकी प्रार्थना-सभायें होनेके बारेमें भी सोचा जा सकता है। सभ्यताका यह तकाजा है कि जो किसी खास प्रार्थनाका विरोध करते हों, वे अुसमें शामिल न हों। अिस कायदेको न माननेसे किसी सभामें गड़बड़ी पैदा हुअे बिना नहीं रह सकती। अगर मरजीके खिलाफ होनेवाले हर काममें दस्तंदाजी करना आम बात हो जाय, तो पूजा-अुपासनाकी आज़ादी, यहाँ तक कि सार्वजनिक भाषणकी आज़ादी भी मजाक बन जायगी। सभ्य समाजमें अिस बुनियादी हक़को काममें लेनेके लिअे संगीनोंका सहारा लेनेकी ज़रूरत नहीं पड़नी चाहिये। सब लोगोंको यह हक़ मानना चाहिये और अुसकी कदर करना चाहिये।

अुम्दा रवादारी

कांग्रेसके सालाना जलसोंमें अुसके प्रदर्शिनी-मैदानमें अलग अलग धार्मिक सम्प्रदायों या सियासी पार्टियोंकी कअी सभायें होती देखकर मुझे बड़ी खुशी होती थी। अिन सभाओंमें अलग अलग मतके और अेक दूसरेके बिलकुल विरोधी विचार प्रकट किये जाते, लेकिन न तो कभी सभाके काममें रुकावट पैदा की जाती या किसीको सताया जाता और न पुलिसकी मददकी ज़रूरत पड़ती। कभी लोग अिस बुनियादी कानूनको तोड़ते भी थे, तो जनता अुनकी निन्दा करती थी।

www.vinoba.in

लेकिन आज तारीफ़के लायक़ रवादारीकी वह भावना कहाँ चली गअी? क्या अिसका कारण यह है कि आज़ादी पा लेनेके बाद हम अुसका बेजा अिस्तेमाल करके अुसकी परीक्षा कर रहे हैं? हम अुम्मीद करें कि आजकी यह ग़ैर-रवादारी राष्ट्रके जीवनमें कुछ ही दिन टिकेगी।

मुझसे यह न कहा जाय — जैसा कि अक्सर मुझसे कहा गया है — कि अिसका अेक मात्र कारण मुस्लिम लीगके बुरे काम हैं। मान लीजिये कि यह बात सच है। लेकिन क्या हमारी सहिष्णुता या रवादारी अितनी खोखली है कि वह किसी ग़ैर-मामूली खिंचावके सामने हार मान लेगी? सच्ची शराफत और सहिष्णुताको बुरेसे बुरे खिंचावका भी सामना कर सकना चाहिये। जब ये दोनों गुण अपनी यह ताक़त खो देंगे, तो वह दिन हिन्दुस्तानका बुरा दिन होगा। हम अपने कामोंसे अपने टीकाकारोंको (हमारे टीकाकार बहुतसे हैं) आसानीसे यह कहनेका मौका न दें कि हम आजादीके लायक़ नहीं हैं। अैसे टीकाकारोंको जवाब देनेके लिअे मेरे दिमागमें कअी दलीलें अुठती हैं। लेकिन अुनसे कोअी सन्तोष नहीं होता। जब हमारी रवादारीसे भरी और मिली-जुली तहज़ीब अपने आप जाहिर नहीं होती, तो हिन्दुस्तान और अुसके करोड़ों लोगोंको प्यार करनेवालेके नाते मेरे स्वाभिमानको चोट पहुँचती है।

अगर हिन्दुस्तान फ़र्ज़को भूलता है

अगर हिन्दुस्तान अपने फ़र्ज़को भूलता है, तो अेशिया मर जायगा। यह ठीक ही कहा गया है कि हिन्दुस्तान कअी मिलीजुली सभ्यताओं और तहजीबोंका घर है, जहाँ वे सब साथ साथ पनपती हैं। हम सब अैसे काम करें कि हिन्दुस्तान अेशियाकी या दुनियाके किसी भी हिस्सेकी कुचली और चूसी हुअी जातियोंकी आशा बना रहे।

बिना लाअिसेन्सके हथियार

अब मैं बिना लाअिसेन्सके छिपे हुअे हथियारोंके हौवेपर आता हूँ। अिसमें कोअी शक नहीं कि दिल्लीमें अैसे कुछ हथियार मिले हैं। थोड़े बहुत हथियार लोग अपने आप मेरे पास भी पहुँचाते रहे हैं। छिपे हुअे हथियारोंको हर तरकीबसे बाहर निकालना ही होगा। जहाँ तक मैं जानता हूँ, दिल्लीमें अभी तक जोर-जबरदस्तीसे जो हथियार निकाले गये हैं, अुनकी तादाद बहुत ज़्यादा नहीं है। ब्रिटिश हुकूमतके दिनोंमें भी लोगोंके पास छिपे हथियार रहते थे। तब किसीने अुनकी परवाह नहीं की। जब आपको किसी जगह छिपे बारूदखानोंका यक़ीन हो जाय, तो अुन्हें हर तरकीबसे अुड़ा दीजिये। आअिन्दा फिरसे अिस तरह बातका बतंगड़ बनानेका मौका न आने पावे, अिसका ध्यान रखिये। हम अंग्रेजोंपर अेक कानून लागू करें और अपने आपके लिअे दूसरा कानून बनायें — जबकि हम सियासी तौरपर आज़ाद होनेका दावा करते हैं — यह ठीक नहीं। हम कुत्तेको मारनेके लिअे अुसे गाली न दें। सब कुछ कहने और करनेके बाद ६० सालकी जी तोड़ मेहनतसे जीती हुअी आज़ादीके लायक बननेके लिअे हम बड़ी-से-बड़ी कठिनाअियोंका भी बहादुरीसे सामना करें। कठिनाअियोंका अच्छी तरह मुकाबला करनेसे हम ज़्यादा योग्य बनेंगे और ज़्यादा अूँचे अुठेंगे।

बहुमतका फ़र्ज़

बहुमतवाले लोग अगर अल्पमतवालोंको अिस डरसे मार डालें या यूनियनसे निकाल दें कि वे सब दगाबाज़ साबित होंगे, तो यह बहुमतवालोंकी बुजदिली होगी। अल्पमतके हकोंका सावधानीसे खयाल रखना ही बहुमतवालोंको शोभा देता है। जो बहुमतवाले अल्पमतके हकोंकी परवाह नहीं करते, वे हँसीके पात्र बनते हैं। पक्का आत्म-विश्वास और अपने नामधारी या सच्चे विरोधीमें बहादुरीभरा विश्वास ही बहुमतवालोंका सच्चा बचाव है। अिसलिअे मैं सच्चे दिलसे यह बिनती करता हूँ कि दिल्लीके सारे हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान दोस्त बनकर गले मिलें और बाकीके हिन्दुस्तानके सामने, क्या मैं कहूँ कि सारी दुनियाके सामने, अेक अूँची और शानदार मिसाल पेश करें। हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंने क्या किया है या वे क्या कर रहे हैं, यह दिल्लीको भूल जाना चाहिये। तभी वह खानगी बदलेके जहरीले घेरेको तोड़नेका गौरवभरा दावा कर सकती है। अगर कभी जरूरी हो, तो सजा देने और बदला लेनेका काम राज्यका है, न कि नागरिकोंका। नागरिकोंको कानून कभी अपने हाथमें नहीं लेना चाहिये।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २३-९-'४७

खुला अिकरार

प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अुस माफीका जिक्र किया, जो कल श्री मनु गांधी और आभा गांधीने सभामें पढ़कर सुनाअी थी। अुन्होंने कहा, अितवार शामको प्रार्थनामें जब वे दोनों भजन गा रही थीं, तो वे लय चूक गअीं और अपनी हँसीको नहीं रोक सकीं। अिससे मुझे बड़ा दुःख हुआ। अिससे जाहिर होता है कि लड़कियोंने प्रार्थनाके महत्वको नहीं समझा। बादमें अुन्होंने मुझसे अपनी अिस गलतीके लिअे माफी माँगी। माफी माँगनेकी कोअी जरूरत नहीं थी, क्योंकि मैं अुनसे नाराज नहीं था। अुलटे, मैं अपने आपपर नाराज हुआ; क्योंकि दोनों लड़कियोंकी शिक्षा मेरी देखरेखमें हुअी थी, फिर भी मैं अुनके दिलमें यह बात नहीं बैठा सका कि प्रार्थना करते समय अुन्हें अपने आपको भगवानमें लीन कर देना चाहिये। लड़कियोंके पछतानेपर मुझे थोड़ी शान्ति मिली। लेकिन मैंने अुन्हें सलाह दी कि वे आम सभामें अपनी गलती कबूल करें। अुन्होंने खुशीसे मेरी बात मान ली। क्योंकि मेरा यह विश्वास है कि अीमानदारीसे खुले आम अपनी गलती कबूल करनेसे गलती करनेवाला पवित्र बनता है और दुबारा गलती करनेसे बचता है।

ज्ञानके रत्न

कुरानकी आयतपर अेतराज अुठानेकी बातको याद करते हुअे गांधीजीने कहा, पाकिस्तानमें हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ जो बुरा बरताव किया गया, अुसका विरोध करनेका आपको हक है। लेकिन अुस कारणसे आपको कुरानकी आयतका विरोध नहीं करना चाहिये। गीता, कुरान, बाअिबिल, गुरु ग्रन्थसाहब और ज़न्दअवस्तामें ज्ञानके रत्न भरे पड़े हैं, हालाँ कि अुनके अनुयायी अुनके अुपदेशोंको झूठ साबित कर देते हैं।

बहादुरीसे मरनेकी कला

आजके अपने कामकी चर्चा करते हुअे गांधीजीने कहा, मैं आज दिनमें रावलपिण्डी और डेरागाज़ीखाँके हिन्दुओं और सिक्खोंके डेपुटेशनसे मिला था। रावलपिण्डी जैसे शहरको बनानेवाले हिन्दू और सिक्ख ही हैं। वे सब वहाँ खुशहाल थे। लेकिन आज वे बेआसरा बने हुअे हैं। अिससे मुझे बड़ा दुःख होता है। अगर हिन्दुओं और सिक्खोंने आजके लाहोरको नहीं बनाया, तो और किसने बनाया? आज वे अपने वतनसे निकाल दिये गये हैं। अिसी तरह मुसलमानोंने दिल्लीको बनानेमें कुछ कम हिस्सा नहीं लिया है। अिसी तरह पिछली १५ अगस्तको हिन्दुस्तानका जो रूप था, अुसे बनानेमें सारी जातियोंने अेकसाथ मिलकर हाथ बँटाया है। मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि पाकिस्तानके अधिकारियोंको पाकिस्तानके हर हिस्सेमें बचे हुअे हिन्दुओं और सिक्खोंको पूरी सलामतीकी गारण्टी देनी चाहिये। अिसी तरह दोनों सरकारोंका यह फ़र्ज़ है कि वे अपने अपने अल्पमतवालोंके लिअे अैसी सलामती और रक्षाकी माँग करें। मुझसे कहा गया है कि अभी रावलपिण्डीमें १८ हजार और वाह छावनीमें ३० हजार हिन्दू और सिक्ख बचे हुअे हैं। मैं तो अुन्हें दुबारा यही सलाह दूँगा कि अुन्हें अपने घर-बार छोड़नेके बनिस्बत आखिरी आदमी तक मर मिटनेके लिअे तैयार रहना चाहिये। अिज़्ज़त और बहादुरीसे मरनेकी कलाके लिअे भगवानमें जीती-जागती श्रद्धाके सिवा किसी खास तालीमकी ज़रूरत नहीं है। तब न तो औरतें और लड़कियाँ भगाअी जायँगी और न जबरन किसीका धर्म बदला जा सकेगा। मैं आपकी अिस अुत्सुकताको जानता हूँ कि मुझे जल्दी-से-जल्दी पंजाब जाना चाहिये। मैं भी यही करना चाहता हूँ। लेकिन अगर मैं दिल्लीमें सफल नहीं हुआ, तो पाकिस्तानमें

(पृष्ठ ३०१ पर)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

५ अक्तूबर १९४७

हिन्दुस्तानी

काका साहब कालेलकर अेक खतमें लिखते हैं —

"यूनियनके मुसलमान यूनियनके वफ़ादार रहेंगे, तो क्या वे हिन्दुस्तानी भाषाको राष्ट्रभाषा मानेंगे और हिन्दी-अुर्दू दोनों लिपियाँ सीखेंगे? अिस बारेमें अगर आप अपनी राय नहीं बतावेंगे, तो हिन्दुस्तानी प्रचारका काम बहुत मुश्किल हो जायगा। मौलाना आज़ाद क्या अपने खयालत नहीं बता सकते?"

काका साहब जो कहना चाहते हैं, वह नअी बात नहीं है। लेकिन आज़ाद हिन्दमें यह बात यूनियनको ज्यादा जोरोंसे लागू होती है। अगर यूनियनके मुसलमान हिन्दुस्तानकी तरफ़ वफादारी रखते हैं और हिन्दुस्तानमें खुशीसे रहना चाहते हैं, तो अुनको दोनों लिपियाँ सीखनी चाहियें।

हिन्दुओंकी तरफ़से कहा जाता है कि अुनके लिअे पाकिस्तानमें जगह नहीं, सिर्फ़ हिन्दुस्तानमें है। अगर कहीं अैसा मौका आवे कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके बीच लड़ाअी छिड़ जाय, तो हिन्दुस्तानके मुसलमानोंको पाकिस्तानसे लड़ना होगा। यह ठीक है कि लड़ाअीका मौका आना ही नहीं चाहिये। आखिरमें दोनों हुकूमतोंको अेक-दूसरीसे मिल-जुलकर काम करना होगा। अेक-दूसरीके प्रति दोस्ती होनी चाहिये। दो हुकूमतें होते हुअे भी काफी चीजें दोनोंके बीच अेक ही हैं। अगर वे दुश्मन बन जायँ, तब तो कोअी भी चीज़ अेक नहीं हो सकती। दोनोंमें दिलकी दोस्ती रहे, तब तो प्रजा दोनोंकी तरफ़ वफादार रह सकती है। यों तो दोनों राज अेक ही संस्थाके मेम्बर हैं। अुनमें दुश्मनी हो ही कैसे सकती है? लेकिन अिस चर्चामें पड़नेकी यहाँ कोअी जरूरत नहीं।

हिन्दुस्तानमें सबकी बोली अेक ही हो सकती है। मैं तो अेक कदम आगे बढ़कर कहता हूँ कि अगर दोनों राज अेक-दूसरेके दुश्मन नहीं बल्कि दिलसे दोस्त बनते हैं, तो दोनों तरफ़ सब नागरी और अुर्दू लिपिमें लिखेंगे। अिसका मतलब यह नहीं कि अुर्दू जबान या हिन्दी जबान रह ही नहीं सकती। लेकिन अगर दोनोंको या सब धर्मियोंको दोस्त बनना है, तो सबको हिन्दी और अुर्दूके संगमसे जो आम बोली बन सकती है, अुसमें ही बोलना है। और, अुसी बोलीको अुर्दू या नागरी लिपिमें लिखना है। कम-से-कम हिन्दुस्तानमें रहनेवाले मुसलमानोंका अिम्तहान तो अिसमें हो जाता है, और यही बात हिन्दू, सिक्ख वग़ैराकी भी लागू होती है। लेकिन मैं अैसा नहीं कहूँगा कि मुसलमान अगर दोनों लिपियाँ नहीं सीखते, तो अुर्दू और हिन्दीके मेलसे बननेवाली सबकी बोली राष्ट्रभाषा हो ही नहीं सकती। मुसलमान दोनों लिपियाँ सीखें या न सीखें, तो भी हिन्दू तथा हिन्दुस्तानके दूसरे धर्मियोंको दोनों लिपियाँ सीखनी चाहियें। आजकी जहरीली हवामें यह सादी सी बात भी शायद लोग नहीं समझ सकेंगे। अुर्दू लिपिका और अुर्दू लफ़्ज़ोंका हिन्दू जान-बूझकर बहिष्कार करना चाहें तो कर तो सकते हैं, लेकिन अुससे हम बहुत कुछ खोयेंगे। अिसलिअे जिन लोगोंने हिन्दुस्तानी प्रचारका काम हाथमें लिया है, फिर वे दो चार हों या करोड़ों, वे अिस सीधी-सादी बातको छोड़ नहीं सकते।

मैं अिसमें भी सहमत हूँ कि मौलाना अबुलकलाम आज़ाद साहब और हिन्दुस्तानके दूसरे अैसे मुसलमानोंको अैसी चीज़ोंमें नमूना बनना चाहिये। अगर वे न बनें, तो कौन बनेगा? हमारे सामने बहुत मुश्किल वक़्त आया है। अीश्वर हमको सन्मति दे!

नअी दिल्ली, २७–९–'४७

मोहनदास करमचंद गांधी

अुपवासका अर्थ

अेक भाअी लिखते हैं:—

"मुझे लगता है कि हर क़दमपर अपने प्राणोंकी बाज़ी लगा देना आपके लिअे आखिरी और कुदरती अिलाज भले हो, मगर अुसका अुपयोग, मरीज़को अिंजेक्शन देकर या अुसमें प्राणवायु भरकर अुसे ज़िन्दा रखनेकी कोशिश करने जैसा ही है।"

ये शब्द प्यारसे और दुःखसे लिखे गये हैं। फिर भी मुझे कहना पड़ेगा कि लेखकने अिस विषयपर पूरा विचार नहीं किया। मेरा भला चाहनेवाले दूसरे बहुतसे भाअियोंका भी शायद यही विचार हो, यह समझकर मैं खुले तौरपर अिसका जवाब देता हूँ।

खत लिखनेवाले भाअीकी अुपमा यहाँ लागू नहीं होती। प्राणवायु भरने और सुअी लगानेका अिलाज सिर्फ़ बाहरी अिलाज है और अुसका प्रयोग शरीरपर, अुसे कुछ ज्यादा समय तक टिकाये रखनेके लिअे ही होता है। अिसलिअे वह क्षणिक है। दर असल देखा जाय, तो अिस अिलाजके न करनेसे अिन्सान कुछ खोता नहीं है। शरीरको अमर तो किया ही नहीं जा सकता। अुसकी अुमर दो दिन बढ़ा देनेसे कोअी बड़ा फायदा नहीं होता।

अुपवास किसीके शरीरपर असर डालनेके लिअे नहीं किया जाता। वह तो दिलको छूता है; अिसलिअे अुसका सम्बन्ध आत्मासे है। अिससे अुपवासका असर क्षणिक नहीं होता। वह टिकाअू होता है। अुपवास करनेवालेमें अिसके लिअे नैतिक योग्यता है या नहीं, यह जुदी बात है। यहाँ हमें अिसपर विचार नहीं करना है।

अपने जितने अुपवासोंकी मुझे याद है, अुनमेंसे अेक ही अैसा था, जिसमें अुपवास करनेमें तो मैंने भूल नहीं की थी, मगर अुसमें मैंने बाहरी अिलाज मिला दिया था, जो अुपवासका विरोधी है। यह भूल न हुअी होती, तो मुझे यक़ीन है कि अुसका नतीजा अच्छा ही निकलता। मेरा मतलब अुस अुपवाससे है, जो मैंने राजकोटके स्वर्गीय ठाकुर साहबके विरोधमें किया था। मैं सँभल गया, अिसलिअे अपनी भूल सुधार सका और अेक भयंकर नतीजा टल गया।

मेरा आखिरी अुपवास कलकत्तामें २–३–४ सितम्बरको हुआ था। अुसका बहुत अच्छा नतीजा निकला। अुसका सम्बन्ध आत्मासे होनेकी वजहसे मैं अुसे टिकाअू मानता हूँ। मगर यह असर टिकाअू हुआ या नहीं, यह तो समय ही बतलायेगा। यह बात अुपवास करनेवालेकी पवित्रतापर और अुसके ज्ञानपर निर्भर है। अिसकी जाँच करना यहाँ ग़ैर-मौज़ूँ होगा। यह जाँच मैं खुद कर भी नहीं सकता। कोअी ग़ैर-तरफ़दार और क़ाबिल शख़्स ही कर सकता है; और वह भी मेरे मरनेके बाद।

नअी दिल्ली, २५–९–'४७

(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी

लेखक : गांधीजी

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके बारेमें गांधीजीके आज तकके सारे विचारोंका संग्रह अिस किताबमें किया गया है। यह किताब हिन्दुस्तानी भाषामें हमारे यहाँसे प्रकाशित हो चुकी है।

कीमत — डेढ़ रुपया   डाकखर्च — ५ आना

व्यवस्थापक, नवजीवन कार्यालय

पोस्ट बॉक्स १०५, अहमदाबाद

www.vinoba.in

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

(पृष्ठ २९९से आगे)

मेरा सफल होना नामुमकिन है। क्योंकि मैं पाकिस्तानके सब हिस्सों और सूबोंमें फौज या पुलिसकी हिफाजतके बिना जाना चाहता हूँ। वहाँ अेक भगवान ही मेरा रक्षक होगा। मैं वहाँ हिन्दुओं और सिक्खोंकी तरह मुसलमानोंका दोस्त बनकर जाअूँगा। मेरी जिन्दगी वहाँ मुसलमानोंके हाथमें रहेगी। मुझे आशा है कि अगर कोअी मेरी जान लेना चाहेगा, तो मैं अुसके हाथ खुशीसे मरूँगा। तब मैं खुद भी वैसा ही करूँगा, जैसा कि सबको करनेकी सलाह देता हूँ।

निराश्रितोंके लिअे घर

निराश्रितोंने मुझसे मकानोंके लिअे भी कहा है। मैंने अुनसे कहा कि नीचे धरती और अूपर आकाशका चन्देवा तना हुआ है। मुसलमानोंके द्वारा डरकर खाली किये गये मकानोंमें रहनेके बजाय आपको अिसी आसरेसे सन्तोष करना चाहिये। अगर आप सब मिल कर काम करें, तो अेक ही दिनमें जरूरी रहनेकी जगह तैयार कर सकते हैं। अिसके अलावा, अैसा करके आप मुस्लिम निराश्रितोंका गुस्सा ठंडा कर सकते हैं और शहरमें अैसा वातावरण पैदा कर सकते हैं कि मैं अेकदम पंजाब जा सकूँ।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २४-९-'४७

हिन्दुस्तानकी कमज़ोर नाव

प्रार्थनामें गाये गये भजनको अपने भाषणका विषय बनाते हुअे गांधीजीने कहा कि अिस भजनके भावको हिन्दुस्तानकी मौजूदा हालत पर पूरी तरह लागू किया जा सकता है। अुसमें कविने भगवानसे प्रार्थना की है कि वह अुसकी कमज़ोर नावको सागर-पार करदे।

सरकारोंको अेक मौका दो

आज बदलेकी भावना सारे वातावरणमें फैली हुअी है। दिल्लीके हिन्दू और सिक्ख नहीं चाहते कि मुसलमान यहाँ रहें। वे दलील देते हैं कि जब हमको पाकिस्तानसे निकाल दिया गया है, तब मुसलमानोंको हिन्दुस्तानी संघमें या कमसे कम दिल्लीमें क्यों रहने दिया जाय? मुस्लिम लीगने ही पहले लड़ाअी शुरू की है। गांधीजीने कहा कि मैं मानता हूँ कि "लड़कर लेंगे पाकिस्तान" का नारा लगानेमें मुस्लिम लीगने गलती की है। मैंने कभी भी अिस बातको नहीं माना कि अैसा कभी हो सकता था। दरअसल ज़ोर ज़बरदस्तीसे देशके दो टुकड़े करनेमें अुन्हें कभी कामयाबी न मिलती। अगर कांग्रेस और अंग्रेज सरकार राजी न होती, तो आज पाकिस्तान क़ायम नहीं हो सकता था। मगर अब तो कोअी अुसे बदल नहीं सकता। पाकिस्तानके मुसलमान अुसके हक़दार हैं। आप थोड़ी देरके लिअे सोचिये कि आपको आज़ादी कैसे मिली। आज़ादीकी लड़ाअी लड़नेवाली कांग्रेस थी। अुसका हथियार मन्द विरोधका था। ब्रिटिश सरकारने हिन्दुस्तानके मन्द विरोधके सामने घुटने टेक दिये और यहाँसे चली गअी। ज़ोर ज़बरदस्तीसे पाकिस्तानका खात्मा करनेका मतलब स्वराजका खात्मा करना होगा। हिन्दुस्तानमें दो सरकारें हैं। अिस देशके नागरिकोंका फ़र्ज़ है कि वे दोनों सरकारोंको आपसमें फैसला करनेका मौका दें। अिस रोज़ानाकी खून खराबीसे तो व्यर्थ की बरबादी होती है। अिससे किसीको कोअी फ़ायदा नहीं होता, बल्कि देशका बेहद नुकसान होता है।

अगर लोग अराजक हो जाते हैं और आपसमें लड़ते हैं, तो वे यही साबित करेंगे कि आज़ादीको हज़म करनेकी अुनमें ताक़त नहीं है। अगर दोनोंमेंसे अेक अुपनिवेश अखीर तक सही बरताव करता रहे, तो वह दूसरेको भी अिसी तरह बरतने के लिअे लाचार कर देगा। सही बरताव करके वह सारी दुनियाको अपनी तरफ़ खींच लेगा। यक़ीनन आप हिन्दुस्तानी संघको अेक अैसी हिन्दू स्टेट बनाकर, जिसमें दूसरे मज़हबोंको माननेवालोंके लिअे कोअी जगह न हो, कांग्रेसके अितिहासको नये सिरेसे नहीं लिखना चाहेंगे। मुझे अुम्मीद है कि आप अैसा कोअी क़दम नहीं अुठायेंगे जिससे आपके पिछले भले कामोंपर पानी फिर जाय।

जूनागढ़

आज जूनागढ़में जो कुछ चल रहा है, अुसकी कल्पना कीजिये। क्या जूनागढ़ और काठियावाड़की क़रीब क़रीब सभी दूसरी रियासतोंमें युद्ध होगा? अगर काठियावाड़के दूसरे राजा और रियासती जनता अेक हो जायँ, तो मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि जूनागढ़ काठियावाड़की दूसरी सभी रिसासतोंसे अलग नहीं रहेगा। अिसके लिअे यह बहुत ज़रूरी है कि सब लोग कानूनके मुताबिक़ काम करें।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २५-९-'४७

संघ-सरकारका फ़र्ज़

प्रार्थना शुरू होनेसे पहले किसीने गांधीजीको अेक पुर्जा भेजा, जिसमें लिखा था कि पाकिस्तानकी सरकार पाकिस्तानसे हिन्दुओं और सिक्खोंको खदेड़ रही है, और आप हिन्दुस्तानी संघकी सरकारको सलाह देते हैं कि हिन्दुस्तानी संघमें मुसलमानोंको नागरिकताके पूरे अधिकारोंके साथ रहने दिया जाय। संघ-सरकार यह दुगुना बोझ कैसे सह सकती है?

प्रार्थनाके बाद अिस सवालका जवाब देते हुअे गांधीजीने कहा कि मैंने यह नहीं कहा कि संघ-सरकारको, पाकिस्तानमें हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ हुअे बुरे बरतावकी तरफ़ ध्यान नहीं देना चाहिये। संघ-सरकारका फ़र्ज़ है कि वह अिनकी रक्षाके लिअे पूरी पूरी कोशिश करे। मगर बेशक, मेरा जवाब यह नहीं हो सकता कि आप सारे मुसलमानोंको यहाँसे भगा दें और अिस तरह पाकिस्तानके बदनाम तरीक़ोंकी नकल करें। जो लोग अपनी खुशीसे पाकिस्तान जाना चाहते हैं, अुन्हें सरहद तक हिफ़ाज़तके साथ पहुँचा देना चाहिये। हिन्दुस्तानी संघकी सरकारका फ़र्ज़ है कि वह पाकिस्तानमें रहनेवाले हिन्दुओं और सिक्खोंकी हिफ़ाज़तका भरोसा दिलाये। मगर अिसके लिअे सरकारको सोच-विचारकर काम करनेका मौका दिया जाय और हरअेक हिन्दुस्तानी अुसे अीमानदारीके साथ पूरा-पूरा सहयोग दे। नागरिकोंका अपने हाथोंमें कानून ले लेना कोअी सहयोग देना नहीं है। हमारी आज़ादी अभी सिर्फ़ अेक माह और दस दिनकी बच्ची है। अगर आप बदला लेनेका अपना पागलपनभरा रवैया जारी रखेंगे, तो आप अिस बच्चीको बचपनमें ही मार डालेंगे।

धर्मकी जीत

अिसके बाद रामायणकी कहानी बयान करते हुअे गांधीजीने कहा कि लंकाकी लड़ाअी दो बराबर पार्टियोंके बीचकी लड़ाअी नहीं थी। अुसमें अेक तरफ़ ज़बर्दस्त राजा रावण था और दूसरी तरफ़ देशनिकाला पाये हुअे राम थे। मगर रामकी जीत अिसीलिअे हुअी कि वे अपने धर्मका कड़ाअीसे पालन कर रहे थे। अगर दोनों ही पार्टियाँ अधर्म करने लगतीं, तो कौन किसकी तरफ़ अुँगली अुठा सकता था? ये सवाल अुनके बरतावको अुचित नहीं ठहरा सकते थे कि किसने ज़्यादा बुराअी की, या किसने बुराअीकी शुरूआत की?

दग़ाबाज़ीकी सज़ा

आप लोग बहादुर हैं। आपने ज़बरदस्त ब्रिटिश साम्राज्यका मुक़ाबला किया है। क्या आज आप कमज़ोर हो गये हैं? बहादुर लोग भगवानके सिवा और किसीसे नहीं डरते। अगर मुसलमान दग़ाबाज़ी करते हैं, तो अुनकी दग़ाबाज़ी अुन्हें बरबाद कर देगी। किसी भी स्टेटमें यह सबसे बड़ा गुनाह माना जाता है। कोअी भी स्टेट दग़ाबाज़ोंको आसरा नहीं दे सकती। मगर शकके कारणसे लोगोंको निकाल देना ठीक नहीं है।

पुलिस और फ़ौजका फ़र्ज़

मैंने सुना है कि पुलिस और फ़ौज हिन्दुस्तानी संघमें हिन्दुओंकी और पाकिस्तानमें मुसलमानोंकी तरफ़दारी करती है। यह सुनकर मुझे बहुत दुःख होता है। जब पुलिस और फ़ौज विदेशी सरकारके मातहत थी, तब वह अच्छी तरह सोच भी नहीं सकती थी कि वह देशकी क्या सेवा कर सकती है। लेकिन आज वह अपने अंग्रेज अफ़सरों सहित देशकी सेवक है। आज अुससे अुम्मीद की जाती है कि वह अीमानदारी और ग़ैर-तरफ़दारीसे काम करे।

www.vinoba.in

जनतासे मेरी अपील है कि वह पुलिस और फ़ौजसे न डरे। आखिर आपके लम्बे-चौड़े देशकी करोड़ोंकी आबादीकी तुलनामें वे लोग बहुत थोड़े हैं। अगर देशकी जनताका बरताव सही रहे, तो पुलिस और फौजके लिअे भी सही बरताव करनेके सिवा और कोअी रास्ता न रह जाय।

लपटोंको कैसे बुझाया जाय?

अिसके बाद गांधीजीने बतलाया कि आज मैं गवर्नर जनरलसे मिला था। अुसके बाद दिल्लीकी सारी जातियोंके खास-खास कार्यकर्ताओं और नागरिकोंसे मिला। फिर मैंने कांग्रेस-वर्किंग कमेटीकी बैठकमें हिस्सा लिया। हर जगह अिसी अेक सवालपर चर्चा हुअी कि नफ़रत और बदलेकी लपटोंको कैसे बुझाया जाय। अिन्सानका फ़र्ज़ है कि वह अपनी कोशिशमें कुछ अुठा न रखे। तब वह विश्वासके साथ अुसका नतीजा भगवानके हाथोंमें सौंप सकता है, जो सिर्फ़ अुन्हींकी मदद करता है, जो अपनी मदद खुद करते हैं।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २६-९-'४७

प्रार्थना शुरू होनेसे पहले गांधीजीने हमेशाकी तरह पूछा कि मैं अपनी प्रार्थनामें .कुरानकी कुछ आयतें भी पढ़ूँगा; क्या किसीको अिसपर अेतराज़ है? अेक नौजवानने कहा कि 'आपको अपनी प्रार्थनासे .कुरानकी आयतें निकाल देनी चाहियें।' गांधीजीने जवाब दिया कि मैं अैसा तो नहीं कर सकता। मगर मैं पूरी प्रार्थना बन्द करनेके लिअे तैयार हूँ। श्रोताओंने कहा कि हम यह नहीं चाहते। हम पूरी प्रार्थना चाहते हैं। अिसपर अेतराज़ करनेवाला नौजवान चुप हो गया।

ग्रंथ साहब

गांधीजीने कहा कि आज कुछ सिक्ख दोस्त मुझसे मिलने आये थे, जो बाबा खड़कसिंहके अनुयायी थे। अुन लोगोंने कहा कि मौजूदा खून-खराबी सिक्ख धर्मके खिलाफ़ है। सच पूछा जाय, तो यह किसी भी धर्मके खिलाफ़ है। अुनमेंसे अेक भाअीने ग्रंथ साहबसे अेक पुरअसर भजन सुनाया, जिसमें गुरु नानकने कहा है कि भगवानको अल्लाह, रहीम, वग़ैरा किसी भी नामसे पुकारा जा सकता है। अगर भगवान हमारे दिलमें है, तो अुसे किसी भी नामसे पुकारनेमें कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। कबीरकी तरह गुरु नानककी भी यही कोशिश रही कि सारे धर्मोंका समन्वय हो। मैंने वह भजन सबको सुनानेके खयालसे लिख लिया था, मगर यहाँ लाना भूल गया। मैं कल अुसे लाअूँगा।

गांधीजीकी अभिलाषा

लाहोरके पण्डित ठाकुरदत्त मेरे पास आये और अुन्होंने मुझे अपनी दुःखभरी कहानी सुनाअी। अपनी हालतका बयान करते हुअे वे रो पड़े। उन्हें लाचार होकर लाहोर छोड़ना पड़ा था। अुन्होंने मुझसे कहा कि 'आपने पाकिस्तानमें अपनी जगहपर मर जाने, मगर गुण्डोंसे घबड़ाकर न भागनेकी जो सलाह दी है, अुसे मैं पूरी तरह मानता हूँ। मगर अुसपर अमल करनेकी ताक़तकी मुझमें कमी रही। अब मैं चाहता हूँ कि वापिस लाहोर चला जाअूँ और मौतका सामना करूँ।' मैं (गांधीजी) नहीं चाहता था कि वे अैसा करें। मैंने अुनसे कहा कि आप और दूसरे हिन्दू और सिक्ख दोस्त, दिल्लीमें फिरसे सच्ची शान्ति क़ायम करनेमें मुझे मदद दें। तब मैं नअी ताक़तके साथ पच्छिमी पाकिस्तानकी तरफ़ बढ़ूँगा। मैं लाहोर, रावलपिण्डी, शेखपुरा और पच्छिमी पंजाबकी दूसरी जगहोंमें जाअूँगा। मैं सीमाप्रान्त और सिंधमें भी जाअूँगा। मैं सबका सेवक और भला चाहनेवाला हूँ। मुझे यक़ीन है कि कोअी मुझे कहीं भी जानेसे न रोकेगा। और मैं फ़ौजकी हिफ़ाज़तमें नहीं जाअूँगा। मैं अपनी ज़िन्दगी लोगोंके हाथोंमें रख दूँगा। जो हिन्दू और सिक्ख पाकिस्तानसे खदेड़ दिये गये हैं, अुनमेंसे हरअेक जब तक अपने अपने घरोंको अिज्ज़तके साथ नहीं लौटता, तब तक मैं चैनकी साँस नहीं लूँगा।

शर्मकी बात

पण्डित ठाकुरदत्त अेक मशहूर वैद्य हैं। कअी मुसलमान अुनके मरीज़ और दोस्त हैं, जिनका वे मुफ़्त अिलाज करते रहे हैं। यह शर्मकी बात है कि अुन्हें भी लाहोर छोड़ना पड़ा। अिसी तरह हकीम अजमलखाँने दिल्लीमें हिन्दू और मुसलमानोंकी अेकसी सेवा की थी। अुन्होंने तिब्बिया कालेज शुरू किया जिसका अुद्घाटन मैंने किया था। अगर हकीम अजमलखांके वारिसोंको दिल्ली और तिब्बिया कालेज छोड़ना पड़ा, तो यह अेक शर्मकी बात होगी। सभी मुसलमान दग़ाबाज़ नहीं हो सकते। और जो दग़ाबाज़ साबित होंगे, अुन्हें सरकार कड़ी सज़ा देगी।

अन्याय नहीं सहना चाहिये

मैं हमेशा सब तरहकी लड़ाअीके खिलाफ़ रहा हूँ। मगर यदि पाकिस्तानसे अिन्साफ़ हासिल करनेका कोअी दूसरा रास्ता नहीं रह जायगा और पाकिस्तानकी जो गलतियाँ साबित हो चुकी हैं, अुनकी तरफ़ ध्यान देनेसे वह लगातार अिन्कार करता रहेगा और अुन्हें हमेशा कम करके बतलानेका अपना तरीका जारी रखेगा, तो हिन्दुस्तानी-संघ-सरकारको अुसके खिलाफ़ युद्ध छेड़ना ही पड़ेगा। युद्ध कोअी मज़ाक नहीं है। कोअी भी युद्ध नहीं चाहता। अुसमें बरबादीके सिवा और कुछ नहीं है। मगर अन्यायको सहनेकी सलाह मैं किसीको नहीं दे सकता। अगर किसी अिन्साफ़की बातमें सारे हिन्दू नष्ट हो जायँ, तो मैं अिसकी परवाह नहीं करूँगा। अगर लड़ाअी छिड़ जाय, तो पाकिस्तानके हिन्दू वहाँ पाँचवीं क़तारवाले नहीं बन सकते। कोअी भी अिसे बर्दाश्त नहीं करेगा। अगर वे पाकिस्तानके प्रति वफ़ादार नहीं हैं, तो अुनको अुसे छोड़ देना चाहिये। अिसी तरह जो मुसलमान, पाकिस्तानके प्रति वफ़ादार हैं, अुन्हें हिन्दुस्तानी-संघमें नहीं रहना चाहिये। सरकारका फ़र्ज़ है कि वह हिन्दुओं और सिक्खोंके लिअे अिन्साफ़ हासिल करे। जनता सरकारसे अपना मनचाहा करा सकती है। जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, मेरा रास्ता जुदा है। मैं तो अुस भगवानका पुजारी हूँ, जो सत्य और अहिंसाका स्वरूप है।

हिन्दू ही हिन्दू धर्मको बरबाद कर सकते हैं

अेक वक़्त था, जब सारा हिन्दुस्तान मेरी बात सुनता था। आज मैं दकियानूसी माना जाता हूँ। मुझसे कहा गया है कि नअी व्यवस्थामें मेरे लिअे कोअी जगह नहीं है। नअी व्यवस्थामें लोग मशीनें, जलसेना, हवाअी सेना और न जाने क्या-क्या चाहते हैं। अिसमें मैं शरीक नहीं हो सकता। अगर लोगोंमें यह कहनेका साहस हो कि जिस ताक़तके ज़रिये अुन्होंने आज़ादी हासिल की है, अुसीके ज़रिये वे अुसे टिकाये भी रखेंगे, तो मैं अुनका साथ दे सकता हूँ। तब मेरी जिस्मानी कमज़ोरी और अुदासी पलक मारते दूर हो जायगी। मुसलमान लोग यह कहते सुने जाते हैं कि "हँसके लिया पाकिस्तान, लड़के लेंगे हिन्दुस्तान।" अगर मेरी चले, तो मैं हथियारके ज़ोरसे अुन्हें हिन्दुस्तान कभी न लेने दूँ। कुछ मुसलमान, सारे हिन्दुस्तानको मुसलमान बनानेकी बात सोच रहे हैं। यह काम लड़ाअीके ज़रिये कभी नहीं हो सकेगा। पाकिस्तान, हिन्दू धर्मको कभी बरबाद नहीं कर सकेगा। सिर्फ़ हिन्दू ही अपने आपको और अपने धर्मको बरबाद कर सकते हैं। अिसी तरह अगर पाकिस्तान बरबाद हुआ, तो वह पाकिस्तानके मुसलमानों द्वारा ही बरबाद होगा, हिन्दुस्तानके हिन्दुओं द्वारा नहीं।

सत्यकी ही जय होती है

दो दिन पहले, प्रार्थनाकी समाप्तिपर श्रोताओंमेंसे अेक भाअीने गांधीजीसे पूछा था कि अगर आप सचमुच महात्मा हैं, तो अैसा चमत्कार दिखाअिये, जिससे हिन्दुस्तान और हिन्दू व सिक्ख बच जायँ। अिसका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि मैंने कभी भी महात्मा होनेका दावा नहीं किया। अिसके सिवा कि मैं आप सबसे बहुत कमज़ोर हूँ, मैं आप लोगों जैसा ही अेक मामूली अिन्सान हूँ। मुझमें और दूसरोंमें सिर्फ़ अितना ही फ़र्क़ हो सकता है कि भगवानपर दूसरोंके बजाय मेरा भरोसा ज़्यादा पक्का है। अगर सभी हिन्दुस्तानी — हिन्दू, सिक्ख, पारसी, मुसलमान और अीसाअी — हिन्दुस्तानके लिअे अपनी जान देनेको तैयार हों, तो अिस देशको कभी नुक़सान नहीं

www.vinoba.in

पहुँच सकता। मैं चाहता हूँ कि आप लोग ऋषियोंकी अिस वाणीको याद रखें—"सत्यमेव जयते नानृतम्"—सत्यकी ही जय होती है, झूठकी नहीं।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २७-९-'४७

राम ही सबसे बड़ा वैद्य है

अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने अुस अखबारी खबरका ज़िक्र किया, जिसमें अुनकी बीमारीका हाल छपा था। गांधीजीने कहा कि यह खबर मेरी जानकारीके बग़ैर छपी है और अिससे मुझे दुःख हुआ है। बीमारी अैसी नहीं थी, जिससे मेरे काममें बाधा पड़ती। अिसके सिवा मैं पहलेसे अच्छा महसूस कर रहा हूँ। अिस बीमारीको अितनी अहमियत नहीं दी जानी चाहिये थी। अुस खबरमें डॉ० दीनशा मेहताको मेरा निजी वैद्य कहा गया है, यह ग़लत है। डॉ० मेहताने मुझसे कहा है कि अिस तरहके बयानके लिअे वे ज़िम्मेदार नहीं हैं। वे मेरे बुलानेपर मेरे पास आये थे, मगर वैद्यकी हैसियतसे नहीं। वे अपनी अध्यात्म सम्बन्धी कठिनाअियाँ हल करानेके लिअे आये थे। डा० मेहता अेक कुदरती चिकित्सक हैं। वे मेरे दोस्त हैं, जिन्होंने मुझे अक्सर मदद दी है। मगर डॉक्टरकी हैसियतसे अुनकी मददकी मुझे ज़रूरत नहीं पड़ी।

डॉ० सुशीला नय्यर, डॉ० जीवराज मेहता, डॉ० बी० सी० रॉय और स्वर्गीय डॉक्टर अन्सारी मेरे निजी डॉक्टर रहे हैं। मगर अुनमेंसे किसीने मुझे पहलेसे बताये बग़ैर मेरी तन्दुरुस्तीके बारेमें कोअी चीज़ अखबारमें नहीं दी। आज, मेरा अेकमात्र वैद्य मेरा राम है। जैसा कि प्रार्थनामें गाये गये भजनमें कहा गया है, राम सारी शारीरिक, मानसिक और नैतिक बुराअियोंको दूर करनेवाला है। कुदरती अिलाजके डॉक्टर दीनशा मेहतासे चर्चा करते हुअे यह सत्य पूरी तौरपर मेरे सामने स्पष्ट हो गया। मेरी रायमें कुदरती अिलाजमें राम-नामका स्थान पहला है। जिसके दिलमें राम-नाम है, अुसे और किसी दवाअीकी ज़रूरत नहीं है। रामके अुपासकको मिट्टी और पानीके अिलाजकी भी ज़रूरत नहीं है। यही सलाह मैं दूसरे ज़रूरतमन्द लोगोंको भी देता रहा हूँ। अब दूसरा कोअी रास्ता अख्तियार करना मुझे शोभा नहीं देगा।

यहाँ बड़े बड़े हकीम, वैद्य और डॉक्टर हैं, जिन्होंने सेवाके खातिर ही अिन्सानोंकी सेवा की है। डॉ० जोशी दिल्लीके अेक मशहूर सर्जन थे, जो धनी और गरीब हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकसी सेवा करते थे। वे गरीबोंका मुफ्त अिलाज करते थे, अुन्हें खाना देते थे और घर लौटनेका खर्च भी देते थे। लेकिन डॉक्टरीका अितना बड़ा ज्ञान पानेके बाद भी वे भगवानके सिवा और किसीका सहारा नहीं चाहते थे।

ग्रन्थ साहबकी याद

अिसके बाद गांधीजीने ग्रन्थ साहबका वह भजन पढ़ा, जिसका अुन्होंने कल शामको जिक्र किया था। अुन्होंने कहा कि वह गुरु अर्जुनदेवका बनाया हुआ था लेकिन हिन्दू धर्मग्रन्थोंके कअी भजनोंकी तरह, सन्तोंके अनुयायी खुद भजन बनाकर भी अुनमें गुरुका नाम दे देते थे। अुस भजनमें यह कहा गया है कि आदमी भगवानको राम, खुदा वग़ैरा कअी नामोंसे पुकारता है। कोअी तीर्थयात्रा करते हैं और पवित्र नदीमें नहाते हैं और कोअी मक्का जाते हैं। कोअी मंदिरमें भगवानकी पूजा करते हैं, तो कोअी मसजिदमें अुसकी अिबादत करते हैं। कोअी आदरसे अुसके सामने सिर झुकाते हैं। कोअी वेद पढ़ते हैं, तो कोअी कुरान। कोअी नीले कपड़े पहनते हैं और कोअी सफेद। कोअी अपने आपको हिन्दू कहते हैं और कोअी मुसलमान। नानक कहते हैं कि जो सच्चे दिलसे भगवानके नियमोंको पालता है, वही अुसके भेदको जानता है। हिन्दू धर्ममें सब जगह यही अुपदेश दिया गया है। अिसलिअे लोगोंके अुस पागलपनको समझना कठिन है, जो साढ़े चार करोड़ मुसलमानोंको हिन्दुस्तानसे बाहर करना चाहता है।

क्या यह भारी भूल है?

अिसके बाद गांधीजीने अेक आर्यसमाजी दोस्तके खतका जिक्र किया, जिसमें कहा गया था कि कांग्रेस पहले तीन बड़ी बड़ी गलतियाँ कर चुकी है। अब वह सबसे बड़ी चौथी गलती कर रही है। यह गलती कांग्रेसकी अिस अिच्छामें है कि हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ साथ मुसलमानोंको भी हिन्दुस्तानमें फिरसे बसाया जाय। गांधीजीने कहा, हालाँकि मैं कांग्रेसकी तरफसे नहीं बोल रहा हूँ, फिर भी खतमें जिस गलतीका जिक्र किया गया है, अुसे करनेके लिअे मैं पूरी तरह तैयार हूँ। मान लीजिये कि पाकिस्तान पागल हो गया है, तो क्या हमें भी पागल बन जाना चाहिये? हमारा अैसा करना सबसे बड़ी गलती और सबसे बड़ा अपराध होगा। मुझे विश्वास है कि जब लोगोंका पागलपन दूर हो जायगा, तो वे महसूस करेंगे कि मेरा कहना ठीक है और अुनका गलत।

भयंकर गैर-रवादारी और दस्तंदाजी

अिसके बाद गांधीजीने अुस बातका जिक्र किया, जो अुन्होंने श्री राजकुमारीसे सुनी थी। अुन्होंने कहा, राजकुमारी अिस समय स्वास्थ्य-विभागकी मंत्री हैं। वह अीसाअी हैं और अिसलिअे हिन्दू और सिक्ख होनेका दावा करती हैं। वह सारी हिन्दू या मुस्लिम छावनियोंमें सफाअी और तन्दुरुस्तीकी देखरेख रखनेकी कोशिश करती हैं। चूँकि पहले पहल मुस्लिम छावनियोंमें जानेवाले हिन्दू मिलना करीब-करीब असंभव था, अिसलिअे अुन्होंने मुस्लिम छावनियोंकी सेवाके लिअे अीसाअी आदमियों और लड़कियोंका अेक झुण्ड तैयार किया। अिससे कुछ चिढ़े हुअे और बेसमझ लोग अीसाअियोंको डरा-धमका रहे हैं और बहुतसे अीसाअियोंने अपने घर छोड़ दिये हैं। यह भयंकर चीज़ है। राजकुमारीसे यह जानकर मुझे खुशी हुअी कि अेक जगह हिन्दुओंने गरीब अीसाअियोंको रक्षाका वचन दिया है। मुझे आशा है कि सारे भागे हुअे अीसाअी जल्दी ही शान्तिसे अपने घरोंको लौट सकेंगे और अुन्हें बिना सताये बीमार और दुःखी अिन्सानोंकी सेवा करने दी जायगी।

मेरी श्रद्धा कमजोर हो गअी है?

अखबारोंने लड़ाअीके बारेमें कही गअी मेरी बातोंको अिस तरह जनताके सामने पेश किया है कि कलकत्तासे मुझे यह पूछा गया है कि क्या मैं सचमुच लड़ाअीकी हिमायत करने लगा हूँ! मैंने जिन्दगी भर अहिंसाके पालनका व्रत लिया है। मैं कभी लड़ाअीकी हिमायत कर ही नहीं सकता। मेरे द्वारा चलाये जानेवाले राजमें न तो फौज होगी और न पुलिस। लेकिन मैं हिन्दुस्तानी संघकी सरकार नहीं चला रहा हूँ। मैंने तो कअी तरहकी संभावनायें बताअी हैं। हिन्दुस्तान और पाकिस्तानको आपसी सलाह-मशविरा करके अपने मतभेद दूर करने चाहियें। अगर अिस तरह वे किसी समझौतेपर न पहुँच सकें, तो अुन्हें पंच-फैसलेका सहारा लेना चाहिये। लेकिन अगर अेक पार्टी अन्याय ही करती रहे और अूपर बताये दो रास्तोंमेंसे अेक भी मंज़ूर न करे, तो तीसरा रास्ता सिर्फ लड़ाअीका ही खुला रह जाता है। जिन परिस्थितियोंने मुझसे यह बात कहलवाअी, अुन्हें लोगोंको समझना चाहिये। दिल्लीमें प्रार्थनाके बादके अपने सारे भाषणोंमें मुझे लोगोंसे यह कहना पड़ा कि वे कानून अपने हाथमें न लें और अपने लिअे न्याय पानेका काम सरकारपर छोड़ दें। मैंने लोगोंके सामने पाकिस्तान सरकारसे न्याय पानेके सही तरीके रखे, जिनमें राजके कानूनको तोड़कर किसीको मारने-पीटने या सजा देनेकी बात शामिल नहीं है। अगर लोगोंने यह गलत तरीका अपनाया, तो सभ्य सरकारका काम असंभव हो जायगा। मेरी अिस बातका यह मतलब नहीं कि अहिंसामें मेरी श्रद्धा जरा भी घटी है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २८-९-'४७

मि० चर्चिलका अविवेक

आज शामकी सभामें हमेशाके बनिस्बत ज्यादा लोग जमा हुअे थे। गांधीजीने पूछा, सभामें कोअी अैसा आदमी है जिसे कुरानकी खास

www.vinoba.in

आयतें पढ़नेपर अेतराज हो? सभाके दो आदमियोंने विरोधमें अपने हाथ अुठाये। गांधीजीने कहा, मैं आपके विरोधकी कदर करूँगा, हालाँकि मैं जानता हूँ कि प्रार्थना न करनेसे बाकीके लोगोंको बड़ी निराशा होगी। अहिंसामें पक्का विश्वास रखनेके कारण अिसके सिवा दूसरा कुछ मैं कर नहीं सकता; फिर भी यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आपको अपना विरोध करनेवाले अितने बड़े बहुमतकी अिच्छाओंका अनादर नहीं करना चाहिये। आपका यह बरताव हर तरहसे अनुचित है। मैं आगे जो बातें कहूँगा, अुससे आपको यह समझ लेना चाहिये कि किसीके बहकावेमें आकर आपने जो ग़ैर-रवादारी दिखाअी है, वह अुस चिड़चिड़ेपन और गुस्सेकी निशानी है जो आज सारे देशमें दिखाअी देता है, और जिसने मि० विन्स्टन चर्चिलसे हिन्दुस्तानके बारेमें बहुत कड़वी बातें कहलवाअी हैं। आज सुबहके अखबारोंमें रूटर द्वारा तारसे भेजा हुआ मि० चर्चिलके भाषणका जो सार छपा है, अुसे मैं हिन्दुस्तानीमें आपको समझाता हूँ। वह सार अिस तरह है:

"आज रातको यहाँ अपने अेक भाषणमें मि० चर्चिलने कहा — 'हिन्दुस्तानमें जो भयंकर ख़ूँरेजी चल रही है, अुससे मुझे कोअी अचरज नहीं होता।

"अुन्होंने कहा — 'अभी तो अिन बेरहमीभरी हत्याओं और भयंकर जुल्मोंकी शुरूआत ही है। यह राक्षसी ख़ूँरेजी वे जातियाँ कर रही हैं, ये जुल्म अेक-दूसरी पर वे जातियाँ ढा रही हैं, जिनमें अूँची-से-अूँची संस्कृति और सभ्यताको जन्म देनेकी शक्ति है और जो ब्रिटिश ताज और ब्रिटिश पार्लियामेन्टके रवादार और ग़ैर-तरफदार शासनमें पीढ़ियों तक साथ साथ पूरी शान्तिसे रही हैं। मुझे डर है कि दुनियाका जो हिस्सा पिछले ६० या ७० बरससे सबसे ज्यादा शान्त रहा है, अुसकी आबादी भविष्यमें सब जगह बहुत ज्यादा घटनेवाली है। और, आबादीके घटावके साथ ही अुस विशाल देशमें सभ्यताका जो पतन होगा, वह अेशियाकी सबसे बड़ी निराशापूर्ण और दुःखभरी बात होगी।'"

आप सब जानते हैं कि मि० चर्चिल ख़ुद अेक बड़े आदमी हैं। वे अिंग्लैण्डके अूँचे कुलमें पैदा हुअे हैं। मार्लबरो परिवार अिंग्लैण्डके अितिहासमें मशहूर है। दूसरे विश्व-युद्धके शुरू होनेपर जब ग्रेट ब्रिटेन खतरेमें था, तब मि० चर्चिलने अुसकी हुकूमतकी बागडोर सँभाली थी। बेशक, अुन्होंने अुस समयके ब्रिटिश साम्राजको खतरेसे बचा लिया। यह दलील देना ग़लत होगा कि अमेरिका या दूसरे मित्र-राष्ट्रोंकी मददके बिना ग्रेट ब्रिटेन लड़ाअी नहीं जीत सकता था। मि० चर्चिलकी तेज सियासी बुद्धिके सिवा मित्र-राष्ट्रोंको अेकसाथ कौन मिला सकता था? मि० चर्चिलने जिस महान राष्ट्रकी लड़ाअीके दिनोंमें अितनी शानसे नुमाअिन्दगी की, अुसने अुनकी सेवाओंकी क़दर की। लेकिन लड़ाअी जीत लेनेके बाद अुस राष्ट्रने ब्रिटिश द्वीपोंको, जिन्होंने लड़ाअीमें जन-धनका भारी नुकसान उठाया था, नया जीवन देनेके लिअे चर्चिल-सरकारकी जगह मजदूर-सरकारको तरजीह देनेमें कोअी हिचकिचाहट नहीं दिखाअी। अंग्रेजोंने समयको पहचानकर अपनी अिच्छासे साम्राजको तोड़ देने और अुसकी जगह बाहरसे न दिखाअी देनेवाला दिलोंका ज्यादा मशहूर साम्राज कायम करनेका फैसला कर लिया। हिन्दुस्तान दो हिस्सोंमें बँट गया है, फिर भी दोनों हिस्सोंने अपनी मरजीसे ब्रिटिश कामनवेल्थके मेम्बर बननेका अैलान किया है। हिन्दुस्तानको आजाद करनेका गौरवभरा कदम पूरे ब्रिटिश राष्ट्रकी सारी पार्टियोंने अुठाया था। अिस कामके करनेमें मि० चर्चिल और अुनकी पार्टीके लोग शरीक थे। भविष्य अंग्रेजों द्वारा अुठाये गये अिस क़दमको सही साबित करेगा या नहीं, यह अलग बात है। और अिसका मेरी अिस बातसे कोअी ताल्लुक़ नहीं है कि चूँकि मि० चर्चिल सत्ताके फेरबदलके काममें शरीक रहे हैं, अिसलिअे अुनसे अुम्मीद की जाती है कि वे अैसी कोअी बात नहीं कहें या करें, जिससे अिस कामकी कीमत कम हो। यक़ीनन आधुनिक अितिहासमें तो अैसी कोअी मिसाल नहीं मिलती, जिसकी अंग्रेजोंके सत्ता छोड़नेके कामसे तुलना की जा सके। मुझे प्रियदर्शी अशोकके त्यागकी बात याद आती है। मगर अशोक बेमिसाल हैं और साथ ही वे आधुनिक अितिहासके व्यक्ति नहीं हैं। अिसलिअे जब मैंने रूटर द्वारा प्रकाशित किया हुआ मि० चर्चिलके भाषणका सार पढ़ा, तो मुझे दुःख हुआ। मैं मान लेता हूँ कि ख़बरें देनेवाली अिस मशहूर संस्थाने मि० चर्चिलके भाषणको ग़लत तरीक़ेसे बयान नहीं किया होगा। अपने अिस भाषणसे मि० चर्चिलने अुस देशको हानि पहुँचाअी है, जिसके वे अेक बहुत बड़े सेवक हैं। अगर वे यह जानते थे कि अंग्रेजी हुकूमतके जुअेसे आज़ाद होनेके बाद हिन्दुस्तानकी यह दुर्गति होगी, तो क्या अुन्होंने अेक मिनटके लिअे भी यह सोचनेकी तक़लीफ़ अुठाअी कि अुसका सारा दोष साम्राज बनानेवालोंके सिरपर है; अुन "जातियों" पर नहीं जिनमें* चर्चिल साहबकी रायमें "अूँचीसे अूँची संस्कृतिको जन्म*देनेकी ताक़त है।" मेरी रायमें मि० चर्चिलने अपने भाषणमें सारे हिन्दुस्तानको अेक साथ समेट लेनेमें बेहद जल्दबाज़ी की है। हिन्दुस्तानमें करोड़ोंकी तादादमें लोग रहते हैं। अुनमेंसे कुछ लाखने जंगलीपन अख्तियार किया है, जिनकी कि कोअी गिनती नहीं है। मैं मि० चर्चिलको हिन्दुस्तान आने और यहाँकी हालतका ख़ुद अध्ययन करनेकी हिम्मतके साथ दावत देता हूँ। मगर वे पहलेसे ही किसी विषयमें निश्चित मत रखनेवाले अेक पार्टीके आदमीकी हैसियतसे नहीं, बल्कि अेक ग़ैर-तरफ़दार अंग्रेजकी तरह आयें, जो अपने देशकी अिज़्ज़तका किसी पार्टीसे पहले खयाल रखता है और जो अंग्रेज सरकारको अपने अिस काममें शानदार सफलता दिलानेका पूरा अिरादा रखता है। ग्रेट ब्रिटेनके अिस अनोखे कामकी जाँच अुसके परिणामोंसे होगी। हिन्दुस्तानके विभाजनने बेजाने अुसके दो हिस्सोंको आपसमें लड़नेका न्योता दिया। दोनों हिस्सोंको अलग-अलग स्वराज देना, आज़ादीके अिस दानपर धब्बे जैसा मालूम होता है। यह कहनेसे कोअी फायदा नहीं कि दोनोंमेंसे कोअी भी अुपनिवेश ब्रिटिश कामनवेल्थसे अलग होनेसे लिअे आज़ाद है। अैसा करनेसे कहना सरल है। मैं अिसपर और ज़्यादा कुछ नहीं कहना चाहता। मेरा अितना कहना यह बतलानेके लिअे काफ़ी होगा कि मि० चर्चिलको अिस विषयपर ज़्यादा सावधानीसे बोलनेकी ज़रूरत क्यों थी। परिस्थितिकी खुद जाँच करनेके पहले ही अुन्होंने अपने साथियोंके कामकी निन्दा की है।

आप लोगोंमेंसे बहुतोंने मि० चर्चिलको अैसा कहनेका मौका दिया है। अभी भी आपके लिअे अपने तरीकोंको सुधारने और मि० चर्चिलकी भविष्यवाणीको झूठ साबित करनेके लिअे काफ़ी वक़्त है। मैं जानता हूँ कि मेरी बात आज कोअी नहीं सुनता। अगर अैसा नहीं होता और लोग अुसी तरह मेरी बातोंको मानते होते, जिस तरह आज़ादीकी चर्चा शुरू होनेसे पहले मानते थे, तो मैं जानता हूँ कि जिस जंगलीपनका मि० चर्चिलने बड़ा रस लेते हुअे बढ़ा-चढ़ाकर बयान किया है, वह कभी नहीं हो पाता और आप लोग अपनी माली और दूसरी घरेलू मुश्किलोंको सुलझानेके ठीक रास्तेपर होते।

(अंग्रेजीसे)

विषय–सूची

		पृष्ठ
गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण	...	२९७
हिन्दुस्तानी	... गांधीजी	३००
अुपवासका अर्थ	... गांधीजी	३००

www.vinoba.in